بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَ نُصَلِّی عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in | KhulasaKhutba-11.02.2022 | محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

तबूक में युद्ध के अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अपनी पूरी सम्पत्ति जिसका मूल्य चार हज़ार दर्हम था आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में भेंट कर दिया।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़-ए-राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुण तथा कीर्तिमान विशेषताएँ।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 11 फ़रवरी 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشۡهَدُ أَنۡ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحۡدَهٗ لَا شَرِيۡكَ لَهٗ وَأَشۡهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُهٗ وَرَسُوۡلُهٗ

أَمَّا بَعۡدُ فَأَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ۔ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ۔ مٰلِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ۔ إِيَّاكَ نَعۡبُدُ وَإِيَّاكَ نَسۡتَعِيۡنُ۔ اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ وَلَا الضَّآلِّيۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

इतिहास में मक्का पर विजय के सम्बंध में हज़रत अबू बकर रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के एक सपने का वर्णन मिलता है कि मुसलमान मक्का के निकट हो गए तथा एक कुतिया भोंकते हुए आई तथा निकट आते ही पीठ के बल लेट गई और उस कुतिया से दूध बहने लगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सपने का स्वप्न-फल यह फ़रमाया कि उनका उपद्रव दूर हो गया तथा विजय निकट ही है, वे तुम्हारी रिश्तेदारी की दुहाई देकर तुम्हारी शरण में आएँगे तथा तुम उनमें से कुछ लोगों से मिलने वाले हो।

मक्का पर विजय से पहले जब अबू सुफ़यान मिअज़्ज़हरान नामक स्थान पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ तो आप स. ने हज़रत अब्बास रज़ी. अथवा हज़रत अबू बकर रज़ी. के सुझाव से अबू सुफ़यान को रात को रोक लिया ताकि वह मुसलमानों की सेना को देख सके। अबू सुफ़यान के सामने रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हरे रंग के लिबास वाला दल आगे बढ़ा जिसमें मुहाजिर तथा अन्सार झंडा थामे शामिल थे। एक हज़ार नासिर लोहे के सैन्य कवच पहने हुए थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपना झंडा हज़रत सअद बिन अबादा रज़ी. को दिया था तथा वे सेना के आगे आगे थे। हज़रत सअद बिन अबादा रज़ी. अबू सुफ़यान के पास से गुज़रे तो उसे ललकारा, इस पर अबू सुफ़यान ने हज़रत अब्बास रज़ी. से कहा-ऐ अब्बास, आज मेरी सुरक्षा का दायित्व तुम पर है। इसके बाद अन्य क़बीले

वहाँ से गुज़रे तथा उसके पश्चात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शोभायमान हुए और आप स. अपनी कस्वा नामक ऊँटनी पर सवार थे और आप स. हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उसैद बिन हज़ीर रज़ी. के बीच में इन दोनों से बातें करते हुए तशरीफ़ ला रहे थे। हज़रत अब्बास रज़ी. ने अबू सुफ़यान से कहा- ये हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम।

जब आप मक्का में दाख़िल हुए तो देखा कि महिलाएँ घोड़ों के मुंहों पर दुपट्टे मार मार कर उन्हें पीछे हटा रही थीं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये दृश्य देखा तो हज़रत अबू बकर रज़ी. से फ़रमाया कि हस्सान बिन साबित ने क्या कहा है? जिस पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हस्सान बिन साबित का वह काव्य पढ़ा जिसमें रौबदार सेना के कदाः के रास्ते दाख़िल होने के बयान में इसी प्रकार का दृश्य चित्रण है, आप स. ने फ़रमाया- फिर वहीं से दाख़िल हों जहाँ से हस्सान बिन साबित ने कहा है। कदाः अरफ़ात का ही दूसरा नाम है।

मक्का पर विजय के अवसर पर आप स. ने शांति की घोषणा फ़रमाई तो हज़रत अबू बकर रज़ी. ने निवेदन पूर्वक कहा कि अबू सुफ़यान सज्जनता को पसन्द करता है। अतः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो अबू सुफ़यान के घर में शरण ले लेगा वह अमन में रहेगा। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश से हुब्ल नामक बुत को गिराया गया तो जुबैर बिन अवाम रज़ी. न अबू सुफ़यान को याद दिला दिया कि ओहद के दिन तुमन इसी बुत के विषय में अति अहंकार के साथ ऐलान किया था कि उसने तुम पर इनाम किया है। अबू सुफ़यान ने कहा कि अब इन बातों को जाने दो, मैं जान गया हूँ कि यदि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़ुदा के अतिरिक्त भी कोई अन्य ख़ुदा होता तो जो आज हुआ वह न होता।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ी. कहते हैं कि मक्का पर विजय वाले दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बैठे हुए थे और हज़रत अबू बकर रज़ी. तलवार सोंते सुरक्षा की दृष्टि से आप स. के सिरहाने खड़े थे।

हुनैन का युद्ध जिसे हवाज़न का युद्ध अथवा औतास का युद्ध भी कहते हैं आठ हिजरी में मक्का पर विजय के बाद हुआ। हुनैन मक्का तथा तायफ़ के बीच मक्का से तीस मील की दूरी पर एक घाटी है। मक्क का विजय समाचार मिलने पर मालिक बिन औफ़ नसरी की प्रेरणा पर अरब के क़बीलों की एक बड़ी सेना मुसलमानों से मुक़ाबले के लिए तय्यार हुई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बारह हज़ार की सेना लेकर मुक़ाबले के लिए निकले तथा सुबह सवेरे हुनैन जा पहुंचे। मुशरिकों की सेना वहाँ पहले से घाटियों में छिपो बैठो थो उसने मुसलमानों पर अनायास इतना घोर हमला किया कि मुसलमान संभल न पाए और बिखर गए। रिवायतों में बयान हुआ है कि आप स. के पास केवल कुछ सहाबी रह गए थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि (हुनैन के युद्ध में) एक समय ऐसा आया कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आस पास केवल बारह सहाबी रह गए। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने घबरा कर आप स. की सवारी की लगाम पकड़ी तथा निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह स. यह आगे बढ़ने का समय नहीं। किन्तु आप स. ने बड़े जोश से फ़रमाया- मेरी सवारी की लगाम छोड़ दो तथा फिर एड़ लगाते हुए आगे बढ़े और यह कहते जाते थे कि मैं मौऊद नबी हूँ जिसकी सुरक्षा का स्थाइं वादा है, मैं झूठा नहीं हूँ इसलिए तुम तीस हज़ार तीर चलाने वाले हों अथवा तीस हज़ार, मुझे चिंता नहीं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश पर हज़रत अब्बास रज़ी. ने मुसलमानों को यह कह कर पुकारा कि ऐ सरः बकरः के सहाबियो! ऐ हुदैबियः के दिन वृक्ष के नीचे बैअत करने वालो! ख़ुदा का रसूल तुम्हें बुलाता है। एक सहाबी कहते हैं कि नए मुसलमानों की कायरता के कारण हमारी सवारियाँ भी दौड़ पड़ी थीं परन्तु जैसे ही यह आवाज़ मेरे कानों में आई मुझे यूँ लगा कि जीवित नहीं मरा हुआ हूँ तथा इसराफ़ील का सूर वातावरण में गूँज रहा है। मैंने अपनी सवारी को मोड़ना चाहा किन्तु वह बिदका हुआ था। मैंने और मेरे कई साथियों ने ऊटों से छलांगें लगा दीं, कई ने तो ऊँटों की गर्दनें काट दीं और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर दौड़ना शुरु कर दिया।

हज़रत अबू क़तादा रज़ी. बयान करते हैं कि हुनैन के युद्ध के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो व्यक्ति किसी हत्या किए हुए के विषय में यह प्रमाण पेश कर दे कि इसने उसकी हत्या की है तो उस हत्या किए हुए व्यक्ति का सामान उसको हत्या करने वाल का होगा। मैंने इस हत्या किए हुए की घटना का रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से वर्णन किया। आप स. के साथ बैठे हुए एक व्यक्ति ने कहा इस हत्या किए हुए व्यक्ति के हथ्यिार जिनका ये वर्णन करते हैं मेरे पास हैं, आप स. जो सामाना मेरे पास ह उसे मेरे पास ही रहने दें तथा इन्हें कुछ और दे दें। हज़रत अबू बकर रज़ी. वहाँ बैठे हुए थे, उन्होंने कहा- ऐसा कदाचित नहीं हो सकता, आप स. कुरैश के एक कायर को तो सामान दिला दें और अल्लाह के शेरों में से एक शर को छोड़ दें जो अल्लाह तथा उसके रसूल की ओर से लड़ रहा है। हज़रत अबू क़तादा रज़ी. कहते थे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खड़े हुए और आप स. ने मुझे वह सामान दिला दिया।

तायफ़ का युद्ध शव्वाल के महीने आठ हिजरी में हुआ। आप स. ने तायफ़ वालों का घेराव किया, विभिन्न रिवायतों के अनुसार इस घेराव की अवधि दस रातों से चालीस रातों तक की बयान की जाती है। इस अवसर पर आप स. ने एक सपना देखा और हज़रत अबू बकर रज़ी. ने इसका वही स्वप्न-फल बयान किया जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का भी विचार था।

तबूक का युद्ध रजब के महीने नौ हिजरी में हुआ। इस युद्ध के अवसर पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अपनी पूरी सम्पत्ति जिसका मूल्य चार हज़ार दर्हम था आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में पश कर दी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. से पूछा कि अपने घर वालों के लिए भी कुछ छोड़ा है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने निवेदन किया कि घर वालों के लिए अल्लाह और उसका रसूल छोड़ आया हूँ। ज़ैद बिन असलम अपने पिता जी से रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ी. को यह कहते सुना कि मैं अपना आधा माल लाया और सोचा कि यदि कभी मैं अबू बकर पर प्राथमिकता ले सका तो वह आज का दिन होगा परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ी. अपनो समस्त सम्पत्ति लेकर उपस्थित हुए तो मैंने कहा कि अल्लाह की क़सम, मैं अबू बकर से किसी चीज़ में भी प्राथमिकता नहीं ले जा सकता।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस घटना का वर्णन करके बैअत करने वालों के विषय में फ़रमाते हैं- एक वे हैं जो बैअत तो कर जाते हैं तथा इक़रार भी कर जाते हैं कि हम दुनिया पर दीन को प्राथमिकता देंगे किन्तु सहायता एवं सहयोग के अवसर पर अपनी जेबों को दबा कर पकड़े रखते हैं, भला ऐसी मुहब्बत दुनिया से करके कोई दीनी लक्ष्य पा सकता है और क्या ऐसे लोगों के वजूद का कुछ भी लाभ हो सकता है, कदाचित

नहीं कदाचित नहीं। फिर आपने फ़रमाया- अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब तक माल जो तुम्हें प्यारा है उसको ख़र्च नहीं करोगे, उस समय तक तुम्हारी कोई नेकी, नेकी नहीं।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि तबूक में एक रात मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. को देखा कि आप तीनों हज़रत अब्दुल्लाह जुल्बजादीन रज़ी. को दफ़न कर रहे थे। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि मैंने चाहा कि काश, यह क़ब्र वाला मैं होता।

हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नौ हिजरी में तबूक से वापसी पर हज के लिए जाने का इरादा किया परन्तु जब आप स. को बताया गया कि हज के अवसर पर मुशरिक लोग शिर्क वाले वाक्य कहते तथा नंगे होकर परिक्रमा करते हैं तो आप स. ने उस साल हज का इरादा छोड़ दिया तथा हज़रत अबू बकर रज़ी. को हज का अमीर नियुक्त फ़रमाया। हज़रत अबू बकर रज़ी. तीन सौ सहाबियों के साथ हज के लिए निकले। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ुर्बानी के बीस पशु भिजवाए। हज़रत अबू बकर रज़ी. के निकलने के बाद आप स. पर सूरः तौबा नाज़िल हुई। आप स. ने हज़रत अली रज़ी. को बुलवाया और उन्हें फ़रमाया कि सूरः तौबा के शुरु में जो बयान हुआ है उसे ले जाओ और क़ुर्बानी के दिन जब मिना (मक्का क निकट एक स्थान) पर लोग एकत्र हों तो उनमें ऐलान कर दो कि जन्नत में कोई काफ़िर दाख़िल नहीं होगा, इस साल के बाद किसी मुशरिक को हज करने की अनुमति नहीं होगी, न ही किसी को नंगे बदन बैतुल्लाह के तवाफ़ की अनुमति होगी। जिस किसी के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई समझौता किया है उसकी अवधि पूरी की जाएगी।

जब हज़रत अबू बकर रज़ी. से हज़रत अली रज़ी. मिले तो हज़रत अबू बकर रज़ी. ने पूछा कि आपको अमीर नियुक्त किया गया है अथवा आप मेरे आधीन होंगे। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यह हज़रत अबू बकर रज़ी. की विनम्रता की चरम सीमा है। हज़रत अली रज़ी. ने कहा कि मैं आप रज़ी. के आधीन रहूँगा। एक रिवायत के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उरफ़ा नामक स्थान पर लोगों से सम्बोधन किया और फिर हज़रत अली रज़ी. से फ़रमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैग़ाम पहुंचाओ, अतः हज़रत अली रज़ी. ने सूरः बरअत (सूरः तौबा) की चालीस आयतें सुनाईं।

हज़रत अबू बकर रज़ी. का वर्णन आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूरे अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुहतरमा अमतुल्लतीफ़ ख़ुर्शीद साहिबा पतनी शेख़ ख़शोद अहमद साहब मरहम असिस्टंट एडिटर अल-फज्ल रबवा का सदवणन फरमाया तथा जनाज़ को नमाज़ गायब पढान को घाषणा फरमाइं। हज़र-ए-अनवर न मतक को मगफिरत तथा स्तर क उत्तम हान क लिए दआ को।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ
وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ
يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131